SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

आदिवासी महिला में शिक्षा से बदलता सामाजिक आयाम – एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

भरत कुमार आर. पटेल, Ph.D., समाजशास्त्र विभाग
श्री कलजीभाई आर. कटारा विनयन महाविद्यालय, शामलाजी, गुजरात, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author

भरत कुमार आर. पटेल, Ph.D.

E-mail : bharatdantod@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/11/2024
Revised on : 24/01/2025
Accepted on : 03/02/2025
Overall Similarity : 06% on 25/01/2025

शोध सार

वर्तमान समय में भारत आर्थिक रूप से तेजी से आगे बढ़ रहा है। समाज के सभी उप समूह में भी विकास की प्रक्रिया देखने को मिलती है। आदिवासी समूह भारतीय समाज का एक उपसमूह होने के कारण विकास और सामाजिक परिवर्तन उनमे भी देखने को मिलता है। आदिवासी समुदाय में गैर आदिवासी समुदाय के संपर्क के कारण परिवर्तन आने की शरुआत हो चुकी है, और उसका प्रभाव आदिवासी महिला पर भी दिख रहा है। वर्तमान समय में आदिवासी स्त्रीओ के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजकीय और धार्मिक क्षेत्र के स्थान में बदलाव देखने को मिलता है। आदिवासी महिला अपने अधिकार से जाग्रत हो के आवाज उठाती है और अर्थ व्यवस्था में भी योगदान दे रही है। स्वतंत्रता के बाद भारत के संविधान में की गई आरक्षण नीति और भौतिक विकास के माध्यम से आदिवासी समुदाय में शिक्षा का स्तर क्रमशः बढ़ता जा रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में आदिवासी समुदाय में स्त्री शिक्षा का बढ़ता स्तर से आया हुआ परिवर्तन की जाँच की गई है। प्रस्तुत अध्ययन की उपकल्पना में आदिवासी समाज में स्त्री का स्थान पुरुष समकक्ष है। वर्तमान समय मे आदिवासी स्त्री में शिक्षा का स्तर बढ़ा है। आदिवासी परिवार में स्त्री की भूमिका पुरुष की भूमिका जितनी ही अहम् मानी जाती है, स्त्री शिक्षा के कारण आदिवासी परिवार के सदस्यों की जीवन शैली में बदलाव आया हुआ है, आदिवासी समाज में स्त्री शिक्षा के कारण उनके सामाजिक परिवर्तन आया हुआ है।

मुख्य शब्द

आदिवासी समुदाय, शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन.

प्रस्तावना

शिक्षा मानव समाज में विकास का महत्वपूर्ण साधन है। इसके द्वारा मानव के जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। शिक्षा का उपयोग समाज में परिवर्तन तथा विकास की प्रक्रिया को निश्चित लक्ष्यों की दिशा सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा के 'शिक्ष' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बनता है। शिक्षा का अर्थ – 'सिखना और सिखाना' शिक्षा का अंग्रेजी शब्द Education है जो लैटिन भाषा के educatum शब्द से बना है। यह शब्द E तथा Duco से बना है। E का शाब्दिक अर्थ अन्दर से तथा Duco अर्थ आगे बढ़ना है। इस आधार पर शिक्षा का शाब्दिक अर्थ है– बच्चो की आन्तरिक शक्ति को बाहर की और प्रकट करना है। महात्मा गांधीजी के मतानुसार शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगिक एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।

साहित्य समीक्षा

१. **कौशिक, आशा (२००३):** "नारी सशक्तिकरण विमर्श एवं यथार्थ" में बताया की राज नैतिक क्षेत्र में महिला–पुरुष के बीच काफी असामनता है इसके साथ ही साथ समाज, संस्कृति, शक्ति सरंचना में वैचारिक एवं व्यवहारिक दोनों आधारों पर काफी भिन्नता है।

२. **देसाई, निरा एवं ठक्कर, उषा (२००६)** ने अपनी पुस्तक "भारतीय समाज में महिलाए" के अंर्तगत महिलाओ की सामाजिक प्रस्थिति का ऐतिहासिक एवं सामाजिक विश्लेष्ण करते हुए, इनका विमर्श प्रस्तुत किया है। इसमें उन्होंने स्वतंत्रता से पूर्व एवं पश्चात् महिलाओ के मुद्दे पर चर्चा करते हुए कहा की स्वतंत्रता के पश्चात् प्रथम दो दशको में शिक्षित मध्यम वर्ग और शहरी महिलाए अध्ययन का केंद्र बिंदु बनी। महिला को अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता हेतु इन्होने शिक्षा को महत्वपूर्ण माना है। इसके साथ ही महिलाओ की प्रस्थिति को ऊँचा करने के लिए राजनितिक सहभागिता को अपरिहार्य माना है।

३. **केन, पेनी (२००६)** ने अपने अध्ययन "माइग्रेशन वर्क फोर्स एंड हेल्थ वुमन एंड ओक्युपेशनल हेल्थ इश्यु एंड पोलिसी" में बताया की ग्रामीण क्षेत्रो में जब पुरुष रोजगार की तलाश में बाहर चला जाता है, तो ऐसी दशा में महिलाओ को घर के साथ–साथ बाहर का भी काम देखना पड़ता है, जिससे उनको दोहरी मार झेलनी पड़ती है। महिला के कार्य के घंटे बढ़ जाता है जिसके परिणाम स्वरूप महिलाओ के स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याए एवं दुर्घटनाए बढ़ जाती है।

४. **कुशवाहा, मधु (२०१४)** ने "जेंडर और शिक्षा" में इन्होने लैगिक असमानता से सम्बन्धी सभी मुद्दों को जोरदार ढंग से उठाया है और साथ ही साथ उन तथ्यों की पड़ताल भी की है, जो शिक्षा में लैगिक असामनता को जन्म देते है, अथवा बढ़ावा देते है। इसमें उन्होंने शिक्षा एवं जेंडर के संबंधो का विश्लेष्ण किया है तथा आधारित द्रष्टिकोण का विकास एक नए परिप्रेक्ष्य में किया है। इसके अतिरिक्त इसमें उन्होंने पितृसत्ता, पुरुषत्व तथा नारीत्व जैसी धारणाओं के विकास में जेंडर आधारित समाजीकरण की भुमीका का विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

५. **कानिटकर, मुकुल (२०१६)** अपने अध्ययन "भारत में महिला शिक्षाः समाज व सरकार की भूमिका" में इन्होने महिला साक्षरता की दर कम होने के सामाजिक, सांस्कृतिक कुरीतियों एवं ऐतिहासिक कारणों को माना है। इसके साथ ही साथ बालिकाओ के लिए विद्यालयों शौचालयों का न होना घर से विद्यालयों की दूरी एवं यातायात के साधनों की साधनों की कमी भी महिलाओ की कम साक्षरता दर का प्रमुख कारण है। उनका मानना है की सरकार महिलाओ के उत्थान के लिए अनेक योजनाए एवं कार्यक्रम को चला रही है, लेकिन सिर्फ इससे महिलाओ का उत्थान नहीं होगा, बल्कि इसके लिए स्वयं समाज को आगे आना होगा और साथ ही साथ महिलाओ के लिए एसी शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी, जो न केवल प्रमाणपत्र दे, बल्कि वह महिलाओ को आत्मनिर्भर भी बनाये।

अध्ययन की परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन गुजरात के आदिवासी महिलाओ में शिक्षा के माध्यम से आया हुआ परिवर्तन के सन्दर्भ में है। प्रस्तुत अध्ययन की परिकलपना निम्नलिखित हैः

१. आदिवासी समुदाय में महिलाओ का स्थान पुरुष समकक्ष देखने को मिलता है।
२. वर्तमान समय मे आदिवासी महिला में शिक्षा का स्तर बढ़ा है।
३. महिला शिक्षा के कारण आदिवासी जीवनशैली में बदलाव आया है।
४. महिला शिक्षा के कारण आदिवासी की परंपरागत मान्यता, मूल्यों एवं रीतियो में बदलाव आया है।
५. आदिवासी समुदाय में स्त्री शिक्षा से सामाजिक परिवर्तन आया हुआ है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उदेश्य निम्नलिखित लिखित हैः

१. आदिवासी समुदाय में महिलाओ के स्थान की जाँच करना।
२. आदिवासी समुदाय में महिलाओ की भूमिका की जाँच करना।
३. आदिवासी समुदाय में महिलाओ की शिक्षा का स्तर देखना।
४. आदिवासी महिलाओ में शिक्षा से आया हुआ बदलाव की जाँच करना।

अभ्यास इकाई और माहिती एकत्रीकरण

प्रस्तुत अध्ययन गुजरात राज्य के अरवल्ली जिल्ले के विजयनगर और भिलोडा तहसील को अभ्यास इकाई बनाया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में बिन यद्च्छ निदर्शन का उपयोग कर के आकस्मिक निदर्शन प्रयुक्ति का उपयोग कर के विजयनगर और भिलोड़ा तहसील के निवास कर रहे आदिवासी शिक्षित महिला को पसंद कर के २०० शिक्षित महिला का अभ्यास इकाई तैयार किया है। पसंद अभ्यास इकाई के उत्तदात्रियो से माहिती एकत्र करने के लिए प्रश्नावली प्रयुक्ति का उपयोग किया गया है।

सामाजिक आर्थिक परिवर्तन

सामाजिक परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमे सामाजिक रचनातंत्र के कार्य और उनके पेटा भागो में बदलाव देखने को मिलता है। प्रस्तुत अध्ययन में आदिवासी महिलाओ में शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ उनके सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलु में कैसा परिवर्तन देखने को मिलता है, इस बात को केंद्र में रखकर प्रस्तुत अध्ययन किया है। शिक्षा के माध्यम से आदिवासी महिला का सामाजिक और आर्थिक बदलाव अहम् बात मानी जाती है।

प्रस्तुत अध्ययन में कुल उत्तदात्रियो में से ४२ प्रतिशत बता रहे है की शिक्षा के माध्यम से उनके परिवारों में शादी, जन्म, मृत्यु, जैसे प्रसंग में परंपरा का पालन जडता से नहीं होता है। आदिवासी समुदाय परंपरा और अपनी संस्कृति के अनुकरण में आग्रह रखते है लेकिन शिक्षित महिला में आया हुआ बदलाव के कारण वे खुद अपने व्यक्तिगत जीवन में बदलाव ली जिनके प्रभाव से परिवार के विभिन्न प्रसंग में परंपरा का चुस्त रूप से पालन नहीं किया जाता है। शिक्षित महिला बता रही है की उनके परिवारों में मृत्यु सम्बन्धी परंपरा, मृत्यु भोज, बाल विवाह, दहेजप्रथा, शादी के बाद के जातीय सम्बन्ध, दोराधागा जैसे परंपरागत रिवाज को तिलांजलि दे रही है।

७६ प्रतिशत महिला बता रही है कि, शिक्षा के माध्यम से वो अपने परिवार में अपने विचार स्वतंत्रत रूप से प्रकट कर सकती है। ७७ प्रतिशत महिलाओ को परिवार के सदस्य महिला शिक्षा को प्रोत्साहित कर रहे हे। समाज में स्त्री शिक्षा का जो अभिगम है कि स्त्री शिक्षा से स्त्री में नकारात्मक बदलाव आयेगा और पुरुष का अधिपत्य कम हो जायेगा ये भ्रामक मान्यता कमजोर साबित हो रही है।

७३ प्रतिशत महिला के परिवार के लोग मन रहे है की महिला को हर एक बात में स्वतंत्रता होनी चाहिए।

७१ प्रतिशत महिला बता रही है की, शिक्षा से उनके रहन–सहन में काफी बदलाव देखने को मिलते है। ८२ प्रतिशत महिला में शिक्षा के माध्यम से समाज में महिला के साथ के व्यवहार में बदलाव आया है। ६४ प्रतिशत महिलाओ में शिक्षा के माध्यम से आरोग्य के प्रति समानता बढ़ी है, बाल संभाल में सकारात्मक बदलाव आया है, सामाजिक कुप्रथा कम हुई है, वैज्ञानिक अभिगम बढ़ा है।

७८ प्रतिशत महिला में शिक्षा के माध्यम से पारिवारिक हिंसा में बढ़ोतरी हुई है और इनके साथ–साथ विवाह–विच्छेद के अनुपात में भी बढ़ोतरी हुई है।

शिक्षा प्राप्त करने के बाद आर्थिक विचारो में भी बदलाव देखने को मिलता है। ६३ प्रतिशत महिला अपने परिवार की आय में से बचत कर ने का प्रयास कर रही है। ५२ प्रतिशत महिला शिक्षा प्राप्त कर के खुद वित्तीय प्रवृति में सक्रिय भूमिका अदा कर रही है। वो जो आय प्राप्त करती है इनमे से वो खुद के लिए भी खर्च कर सकती है।

८१ प्रतिशत महिला बता रही है कि, शिक्षा प्राप्त कर के उनके परिवार के सदस्य अपने परम्परागत व्यवसाय बदलने में कामयाब रहे है। शिक्षा के माध्यम से कुशलता, योग्यता और नूतन विचार के साथ अपने व्यवसाय में नए आयाम और व्यवसाय प्राप्त करने में सफल रहे है।

८६ प्रतिशत महिला की परिवार की स्थिति शिक्षा के माध्यम से मजबूत बनी है। कम शिक्षा के कारण मजदूरी, रुणग्रस्तता जैसी समस्या का सामना कर रहे थे, लेकिन शिक्षा के बाद आर्थिक रूपांतरण से अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है।

७८ प्रतिशत महिला में शिक्षा के माध्यम से अपने निवास में बदलाव आया है साथ–साथ अपने परम्परागत निवास के स्थल में स्थानातरण देखनेको मिला है।

शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक परंपरा

३५ प्रतिशत महिलाने अंग्रजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त की है। ६५ प्रतिशत महिला गुजराती माध्यम से शिक्षा प्राप्त की है। ६३ प्रतिशत महिला बता रही है की उन्होंने शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंटरनेट एवं कम्प्युटर, मोबाइल जैसे उपकरणों का उपयोग किया है। आदिवासी समाज में शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक उपकरण का उपयोग बढ़ रहा है। गुजरात सरकार ने आदिवासी शिक्षा के परिवर्तन लेन के लिए विभिन्न सही योजना लागु की है जिसमे टेबलेट एवं कंप्यूटर मुफ्त में और मामूली कीमत में उबलब्ध कराते है।

८६ प्रतिशत महिला बता रहे है कि, उनके परिवार में सभी बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हे। बहुत कम परिवारों में बच्चे शिक्षा प्राप्त करने के लिए नहीं जाते है। इस बात से पता चलता है कि, एक शिक्षित महिला का प्रभाव समग्र परिवार पे देखने को मिलता है। ३५ प्रतिशत महिला बता रहे है कि, शिक्षा के पीछे जो खर्च होता है उनकी वजह से महिला को शिक्षा बीच में छोड़ देना पड़ता है। समाज में एक मान्यता है की, परिवार में महिला शिक्षा प्राप्त करती हे तो उससे वो पैसे कमाकर परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करेगी इसी वजह से स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित करते है।

८१ प्रतिशत महिला के परिवार में १ से ३ सदस्य ऐसे है जिसने अभी तक शिक्षा प्राप्त नहीं की है और जिसने शिक्षा नहीं प्राप्त नहीं की उनकी आयु ५० साल से ज्यादा है। जबकि १६ प्रतिशत महिला के परिवार में सभी ने शिक्षा प्राप्त की है।

६६ प्रतिशत महिला बता रहे है कि, शिक्षा की वजह से उनके निजी जीवन में आमूल परिवर्तन देखने को मिला है। शिक्षा के माध्यम से उनकी दैनिक जीवन शैली में बदलाव आया है, रहन सहन, खाने का तरीका, पोशाक एवं व्यक्तिगत स्वास्थ्य प्रति परिवर्तन हुआ है। शिक्षा के माध्यम से उन्हें पता चला है की हररोज स्नान करना जरुरी है, माहवारी के दौरान सेनेटरी पैड का उपयोग करना चाहिए जैसे बदलाव उनके निजी जीवन में देखने को मिलता है। ५८ प्रतिशत महिला बता रही है कि, शिक्षा के माध्यम से वो अपने सुरक्षा के प्रति जाग्रत बनी है, उन्हें कौन सा अधिकार मिला है, उनके लिए कैसे–कैसे कानून बनाया है, और ये सबका आधार ले के कैसे अपना अधिकार हसिल

कर सकती है ये सब बातो में बदलाव देखने को मिलता है। जबकि एक बात देखने को मिली है, २४ प्रतिशत महिला शिक्षा प्राप्त कर के अपने पारिवारिक सम्पति में अपना अधिकार जता रही और परिवार के सदस्यों के साथ संघर्ष में भी आती है।

६३ प्रतिशत महिला अपने सांस्कृतिक विरासत को एक विशिष्ट बात मानते है, शिक्षा प्राप्त कर ने के बाद भी अपनी परम्परगत सांस्कृतिक विरासत को अपना रहे है। ७८ प्रतिशत महिलाओ ने शिक्षा प्राप्त कर ने के बाद अपने परंपरागत पोषक को बदल दिया है और वो गैर आदिवासी के पोषाक अपना रहे है। ८१ प्रतिशत महिला अपने श्रृंगार के प्रसाधनो में अपने समुदाय के परंपरागत साधनों की बजाय आधुनिक साधनों का उपयोग कर रहे है। ६१ प्रतिशत महिला के परिवारों में शिक्षा के माध्यम से खाने–पीने की आदत बदल गई है और खाने की चीजे बदल गई है जैसे परंपरागत चावल और सुखी सब्जी ज्यादा उपयोग करते थे उनकी जगह पंजाबी, चाइनीज, गेहू, की चीजे ज्यादा उपयोग कर रहे है। आदिवासी समुदाय धर्मान्तरण की वजह से ख्रिस्ती धर्म का अनुसरण ज्यादा होने की वजह से अपनी परंपरागत संस्कृति की जगह पाचाश्त्य संस्कृति का अनुसरण बढ़ रहा है।

परिकल्पना की जाँच

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पना निम्नलिखित देखने को मिलती हैः

१. आदिवासी समाज में स्त्री का दरजा पुरुष के समकक्ष देखने को मिलता है।
प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाता के प्रतिभावो का विश्लेषण कर के पता चलता है कि, वर्तमान समय में ६२ परिवारों में महिला की भूमिका को अहम् मानी जाती है। परिवारों के महत्वपूर्ण निर्णयों में महिला को शामिल किय जाता है। इसी तरह ये परिकल्पना सच मालूम होती है।

२. वर्तमान समय में आदिवासी महिला में शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है।
प्रस्तुत अध्ययन में पता चलता है कि, सभी महिला ने शिक्षा प्राप्त की है। गुजराती और अंगेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रही है। पारिवार की आर्थिक कटौती में भी महिला की शिक्षा में कोई रूकावट नहीं आ रही है। वर्तमान समय में माता–पिता भी सक्षम बन रहे है। लड़का एवं लड़की का भेदभाव को दूर कर के अपने संतानों को शिक्षा दे रहे है। इस बात से पता चलता है कि आदिवासी महिला में शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है।

३. आदिवासी परिवार में महिला की भूमिका पुरुष समकक्ष मानी जाती है।
अध्ययन के आधार पर पता चलता है कि, शिक्षा की वजह से ७२ प्रतिशत महिला अपने परिवार में आर्थिक उपार्जन की भूमिका निभा रही है। मजदूरी, खेत मजदूरी, औधोगिक इकाई में मजदूरी, नौकरी, दुकान सब चलाकर परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत बना रही है। इस बात से पता चलता है की आदिवासी परिवार में महिला की भूमिका पुरुष समक्ष मानी जाती है।

४. शिक्षा से महिला की जीवन शैली में परिवर्तन देखने को मिलता है।
प्रस्तुत अध्ययन से पता चलता है कि, शिक्षा के माध्यम से महिला के परंपरागत जीवनशैली के पहलु की बजाए आधुनिक संस्कृति के तत्व अपना रहे है। अपनी रहन–सहन, खाने–पिने की चीजे, पोशाक, श्रृंगार के प्रसाधन और धर्म के विभिन्न रिती–रिवाज को अपनाकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित कर रही है। इस बात से पता चलता है कि शिक्षा से महिला की जीवन शैली में परिवर्तन देखने को मिलता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन मे गुजरात के आदिवासी महिलाओं में शिक्षा के कारण होने वाले परिवर्तन की जाँच की गई है। गुजरात में शिक्षा का स्तर अच्छा देखने को मिलता है। इनके साथ साथ आदिवासी समुदाय में भी शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए विभिन्न योजना लागु की है जिनकी वजह से आदिवासी समुदाय की महिला में शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है और उनका प्रभाव महिला के सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन और सांस्कृतिक जीवन में उल्लेखनीय को मिल रहा है।

सन्दर्भ सूची

1. Bhandari, Sarita (2005) *Problems of Women Education,* Arise Publication, New Delhi.
2. Desai, Neera (1985) *Indian Women Change and Challenges,* Popular Prakashan, Bombay.
3. सिंह, अरुलकुमारी (1992) *जनजातीय समाज में स्त्रियाँ,* रावत प्रकाशन, जयपुर।
4. शाह, कल्पना (1992) *महिला का बदलता दरज्जा एवं भूमिका,* यूनिवर्सिटी ग्रन्थ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद।
5. खांडेकर, दीपक (2018) आदिवासी महिला शश्क्तिकरणः समस्या एवं आगे का मार्ग, *योजना,* अक्तूबर–2018।
6. भट्ट, उषा (1985) *आधुनिक भारत में महिला जाग्रति का उद्‌भव और विकास,* यूनिवर्सिटी ग्रन्थ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद।
7. उपाध्याय, चंद्रकांत (2004) *आदिवासी विकासः प्रश्नों एवं पद्‌कार,* आदिवासी संशोधन एवं तालीम केंद्र, अहमदाबाद।
8. मकवाना, रमेश (2011) *आदिवासी समुदाय में सामाजिक परिवर्तन,* सरदार पटेल यूनिवर्सिटी प्रेस, वल्लभविद्यानगर, आंणद।

****